लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

बड़ो लोककथा

बूढ़ा और तेंदुवा

संग्रह: सुकुमार बसुमतारी
अनुवाद: प्रलय कुमार बड़ो

...मनुष्य जाति बहुत ख़राब है। यह जरूरत के समय तो बहुत आदर सम्मान करती है लेकिन जब जरूरत समाप्त हो जाती है तो बहुत ही दुर्व्यवहार करती है।

एक गाँव में एक बुजुर्ग पति-पत्नी रहा करते थे। उनकी कोई संतान नहीं थी और न ही कोई संपत्ति। वह बूढ़ा घर के बाँस से सामान बनाकर बेचता था और उससे मिलने वाले पैसों से उनकी गुज़र-बसर होती थी।

एक दिन बूढ़ा बांस से कोई सामान बना रहा था लेकिन उससे शिकार करने वाला फन्दा बन गया। जब फन्दा बन गया तो वह अपनी पत्नी से बोला कि वह बाहर जंगल में जा रहा है, वहीं शिकार के लिये फन्दा बिछायेगा और उसमें जो भी जानवर फँसेगा वही कल सुबह का भोजन होगा। ऐसा कहकर वह जंगल में जाता है और फन्दा लगाकर घर वापस आता है।

इसी बीच रात के समय एक तेंदुआ भूख और प्यास से व्याकुल होकर शिकार की तलाश में भटक रहा था। भटकते-भटकते वह वहीं जा पहुँचा जहाँ पर बूढ़े ने फंदा लगाया था और वह उस फंदे में फँस जाता है।

अगली सुबह बूढ़ा एक अच्छे शिकार की उम्मीद लेकर जंगल में पहुँचा तो वह देखता है कि उसके बिछाए गए फंदे में एक बड़ा तेंदुआ फँस गया है। यह देख कर वह अत्यंत प्रसन्न हो जाता है। बूढ़े को देखते ही तेंदुआ गुर्राया और बोला "मुझे इस फंदे से मुक्त कर दो। नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं" यह सुनकर बूढ़ा भयभीत हो गया और उसने फंदे को खोल दिया। आज़ाद होते ही तेंदुए ने बूढ़े से कहा कि वह बहुत भूखा है और वह उसे खाकर अपनी भूख मिटाएगा। यह सुनकर बूढ़ा तेंदुए से बोला कि उसने उसकी जान बचाई है। इसलिए उसे बूढ़े को नहीं खाना चाहिए। परन्तु इन बातों का तेंदुए पर कोई असर नहीं पड़ा। अन्त में दोनों के बीच यह तय हुआ कि तीन अलग-अलग पंचों से पूछा जाएँ और उनका जो फैसला होगा, उसे दोनों स्वीकार करेंगें।

पहले पंच की तलाश करते-करते वे दोनों एक जापि (=बाँस से बना हुआ छाता) के पास पहुँचे। वहाँ पहुँचकर तेंदुए ने जापि से पूछा "हे

जापि ! यह बूढ़ा फंदा बिछाकर मुझे मारना चाहता है, अब तुम बताओ कि मुझे इस बूढ़े को खाना चाहिए या नहीं?" यह सुनकर जापि ने जवाब दिया कि यह मनुष्य जाति बहुत ख़राब है। यह जरूरत के समय तो बहुत आदर सम्मान करती है लेकिन जब जरूरत समाप्त हो जाती है तो बहुत ही दुर्व्यवहार करती है। अब मुझे ही देख लीजिये, जब मैं काम करने लायक था तो मेरा मालिक मेरी बहुत इज्जत करता था और आज जब मेरी कोई जरूरत नहीं तो मुझे धूप और बारिश में छोड़कर चला गया। अतः मैं यह फैसला देता हूँ कि आप इस बूढ़े को मारकर खा जाइये।"

जापि का फैसला सुनकर बुजुर्ग का हृदय तेजी से धड़कने लगा। अब दोनों एक दूसरे पंच के पास पहुँचे। यह एक पाटा था। तेंदुए ने पाटे को पूरी घटना सुनाई और उससे भी पूछा कि क्या वह इस बूढ़े को खा सकता है ? सारी बातें सुनकर पाटा बोलता है कि यह मनुष्य जाति अत्यंत झूठी है। इसे सिर्फ अपने सुख-दुःख की चिंता रहती है, देखो तेंदुआ भाई आज जब मेरी कोई जरूरत नहीं तो मुझे मिट्टी और कीचड़ में दबकर रहना पड़ रहा है। धूप और बारिश के दिनों में भी मैं बेहाल हो जाता हूँ। अतः मेरी मानो तो इस बूढ़े को खा जाओ। यही मेरा फैसला है।

तेंदुआ सुनकर अत्यंत खुश हो गया। वहीं दूसरी तरफ बूढ़े की धड़कनें तेज़ हो गईं। वह अत्यंत भयभीत हो गया और भूख-प्यास सब भूल गया।

अब तक दो पंचायतों का फैसला हो चुका था और एक ही पंचायत बाकी था। इसलिए तेंदुए ने सोचा कि क्यों न वह अपने मित्र सियार से भी मिलते चले। रास्ते में चलते-चलते उसे उसका सियार मित्र भी मिल गया। वह भी उसी रास्ते शिकार ढूंढते हुए आ रहा था। सियार को देखते ही तेंदुआ बोला, "सखा प्रणाम।" सियार बोला- "अरे मित्र ! बहुत दिनों बाद.... सब कुशल मंगल तो है न?" तेंदुए ने कहा- "एक मदद की आशा से हम आपके पास आये हैं। अच्छा हुआ कि आपसे रास्ते में ही भेंट हो गयी।" फिर तेंदुए ने सियार को सारी कहानी आरम्भ से अंत तक बताई। यह सुनकर सियार बोला कि जब तक मैं घटनास्थल पर जाकर खुद नहीं देख लेता तब तक फैसला देना आसान नहीं होगा। फिर वे तीनों घटनास्थल पर पहुँचते हैं। वहाँ पहुँचकर सियार बूढ़े से बोलता है कि आप फिर से फंदा लगाइये, जब वह फंदा लगा देता है तो वह तेंदुए से बोला कि आप इसमें कैसे फँसे यह मुझे भी दिखाइए। यह सुनकर तेंदुआ फंदे में फँस गया। फँसते ही सियार बूढ़े से बोला कि न्याय हो गया बूढ़े, अब आप दूसरे का मांस खाने वाले इस तेंदुए को मार दीजिये। तेंदुआ गुस्से में सियार से बोला कि तुमने गद्दारी की है। यही तुम्हारा न्याय है ? परन्तु बूढ़े ने उसकी बात अनसुनी कर दी और अपने फावड़े से एक ही बार मे तेंदुए को मार डाला। इसके बाद सियार ने बूढ़े से कहा कि मैंने तो तुम्हारी जान बचा दी अब मुझे इनाम में क्या मिलेगा। यह सुनकर बूढ़ा

उसे अपने घर लाता है और उसे मुर्गी, सूअर आदि खिलाता है। धीरे-धीरे वह सियार वहीं रह जाता है और बाद में घर में रहते हुए सियार ही घर का कुत्ता बन जाता है ऐसी मान्यता है।

संपर्क-सूत्र:
ई-मेइल : pralayboro@gmail.com
मोबाइल:7576865806